बाल साहित्य की जादुई दुनिया

— ऊषा शर्मा

इस लेख में ऊषा शर्मा बताती हैं कि बाल साहित्य की दुनिया कितने कमाल की दुनिया है। इस दुनिया में प्रवेश बच्चों को आनंद से भर देता है। बावजूद इसके बाल साहित्य हमारे स्कूलों में अपनी उपयुक्त जगह नहीं बना पाया है। उन्होंने स्कूलों में बाल साहित्य के प्रति इस उपेक्षित नजरिये के सम्भावित कारणों की पड़ताल की है और बाल साहित्य प्रकाशन के वर्तमान हालात का हवाला देते हुए अच्छे बाल साहित्य की कसौटियों व चयन की प्रक्रियाओं को सामने रखने की कोशिश की है।

बाल साहित्य की एक अपनी ही दुनिया और अपने ही रंग हैं। जिन्हें इस दुनिया में दाखिल होने और इन रंगों से सराबोर होने के अवसर मिले हैं उन्होंने इससे मिलने वाले आनंद का भरपूर आस्वादन किया हैं। बाल साहित्य अपने माध्यम से बच्चों को अपनी कल्पनाओं को एक विस्तृत आकाश देने, एक विस्तृत अनुभव संसार का दरवाजा खोलने और अपनी भाषा रचने-गढ़ने का अवसर देता है। जब किसी बच्चे के हाथ में कहानी या कविता की या कोई चित्रात्मक किताब आती है, तो वह उसके पन्ने-दर-पन्ने पलटते हुए अपने अनुभव-संसार का विस्तार करता है। संसार के बारे में अनेक अवधारणाएँ 'बनती' और 'बिगड़ती' हैं, 'नया रूप और आकार' पाती हैं। एक अनुभव संसार वह है, जो बच्चों के सामने है, प्रत्यक्ष है, जिससे रोज उनका आमना-सामना होता है- शाला के रास्ते में आने वाले पेड़, गली का कुत्ता, किसी के घर से बाहर जाती या दबे पाँव किसी घर में भीतर जाती बिल्ली, दादाजी की छड़ी, दादीजी का चश्मा, माँ की साड़ी का आंचल जिसमें अकसर छुपन-छुपाई खेलते हैं या किसी की डाँट से बचने की ओट के रूप में पाते हैं, नल से बहते पानी को ऊपर उछालना और 'बारिश' लाना, कई-कई घंटों पानी के लिए लाइन में लगना या पानी की टंकी का इंतजार करना, रोटी के गोल आकार के लिए अपने आस-पास रूपक खोजना आदि। वह सब कुछ जो बच्चों के आस-पास है, उनकी अवधरणाओं का आधार है; लेकिन जैसे ही वे बाल साहित्य की दुनिया में दाखिल होते हैं, उनके अनुभव-संसार का और अधिक विस्तार होने लगता है। उन्हें यह ज्ञात होता है कि उनके घर के पास वाला, शाला में लगा हुआ या अलग-अलग रास्तों में लगे हुए पेड़ इस किताब के पेड़ से कुछ अलग है या वैसा-सा ही है, वे अलग-अलग तरह की छड़ियों का अवलोकन करते हैं और पाते हैं कि छड़ी का इस्तेमाल सिर्फ चलने में सहारे के लिए ही नहीं होता बल्कि इससे पेड़ के आम तोड़े जा सकते हैं, दूध चट करने वाली बिल्ली भगाई जा सकती है, रोटी कितनी बड़ी और बेहद पतली भी हो सकती है, पानी सिर्फ नल में ही नहीं होता, वह तो नदी, नालों, समुद्र, नहर, तालाब, कुओं में भी होता है, कौआ सिर्फ पेड़ पर ही नहीं बैठता, वह तो गाय-भैंस की पीठ पर भी बैठता है, जब हाथी को हिचकी आती है तो क्या-क्या होता है, उसकी हिचकी

बंद कैसे होती है, आधी गोलाकृति हमारे आस-पास कहाँ-कहाँ है, आदि-आदि। बाल साहित्य की इस चामत्कारिक दुनिया का जादू बच्चों को स्वतः ही अपने सम्मोहन-पाश में बाँध लेता है।

लेकिन हमारी शिक्षा व्यवस्था में ऐसे बाल साहित्य के लिए न तो कोई स्थान नजर आता है और न ही ऐसा बाल साहित्य जो सम्मोहन का जादू जानता हो। ऐसे अनेक बच्चे हैं जो शिक्षा-व्यवस्था की 'दुर्व्यवस्था' के कारण इस जादू से अछूते हैं। जिसका सबसे बड़ा उदाहरण है -पाठ्य-पुस्तक संस्कृति! क्या कोई पाठ्य-पुस्तक बाल साहित्य जैसा जादू उत्पन्न करने में समर्थ है? क्या वह बाल साहित्य जैसा चमत्कार कर पाती है कि हाथ और नजरों से किताब छूटे ही ना! संभवतः नहीं! पाठ्य-पुस्तक की अपनी एक 'विशिष्ट और विचित्र-सी' संस्कृति जो कहीं न कहीं परीक्षा के भय को अपने भीतर समेटे हुए है या यूं कहिए कि वह स्वयं परीक्षा से भयाक्रांत है। पाठ्य-पुस्तक परीक्षा के दायरे में बँधी हुई है और एक तयशुदा दिशा में चलती है। पहले पहला पाठ 'पढ़ाया' जाएगा, फिर दूसरा, फिर तीसरा और फिर चौथा ...। पाठ-दर-पाठ 'पढ़ाने' के एक निश्चित अंतराल पर परीक्षा होगी जो उन पाठों पर ही आधरित होगी। परीक्षा के आधार पर बच्चों की प्रगति का लेखा-जोखा रखा जाएगा। तो फिर 'दूसरी' किताब यानी बालसाहित्य की कोई किताब क्यों पढ़ी जाए? लिहाजा बालसाहित्य शाला या कक्षा के बाहर ही अपनी उपस्थिति दर्ज करता है। इसका मतलब यह है कि किन्हीं नीतियों के तहत अगर बाल साहित्य खरीद भी लिया जाए, तो वह किसी अलमारी या किसी संदूक में बंद हो जाता है। प्राथमिक स्तर पर और विशेष रूप से कक्षा एक और दो के बच्चों के लिए बाल साहित्य जैसी किसी 'चीज़' को निषेध मान लिया जाता है, क्योंकि शिक्षकों एवं 'शिक्षा अधिकारियों' के मध्य यही अवधारणा व्याप्त है कि पहली-दूसरी के बच्चे पढ़ना तो जानते नहीं हैं, फिर इन्हें बाल साहित्य देने से क्या फायदा? ये भला कहाँ पढ़ पाएँगे? किताब और फाड़ देंगे। फिर पड़ जाएँगे लेने के देने! यही कारण है कि बच्चों की शिक्षा केवल पाठ्य-पुस्तक तक ही सीमित होकर रह जाती है जिसका सरोकार केवल परीक्षा से है। हम यह भूल जाते हैं कि शिक्षा परीक्षा में 'अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होना' नहीं है।

'भारतीय समाज की बाहुल्यवादी और विविध प्रकृति निश्चित रूप से यह माँग करती है कि न केवल विविध प्रकार की पाठ्य-पुस्तकें छापी जाएँ; बल्कि अन्य सामग्री भी तैयार की जाए ताकि बच्चों की रचनात्मकता, सहभागिता और रुचियों का इस तरह विकास हो सके कि उनके अधिगम में बढ़ोतरी हो। कोई एक पाठ्य-पुस्तक विविध समूह के बच्चों की विस्तृत आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती। ...शिक्षण की सहायक सामग्री तथा अन्य पुस्तकें, खिलौने आदि स्कूल को बच्चों के लिए रुचिकर बना देते हैं। ...शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की आधार सामग्री जुटानी चाहिए, जिनसे ऐसी सहायक सामग्री बनाई जा सके, जिसका साल दर साल इस्तेमाल हो सके।' (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005: 106, 107)। इस संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि बच्चों को पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त ऐसी सामग्री उपलब्ध कराई जाए, जो उनके सीखने में मदद कर सके। पढ़ना सीखने के संदर्भ में तो यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है और अनिवार्य भी।

शाला के शुरूआती सालों में बच्चों की पढ़कर समझने की क्षमता का विकास करने का शिक्षा-शास्त्र इस बिंदु पर बल देता है कि बच्चों को विविध प्रकार का बाल साहित्य उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इससे वे पढ़ने का आनंद भी ले सकेंगे। बाल साहित्य का अपना एक अलग कलेवर और भाषायी छटा होती है। किताब को हाथ में उठाकर पकड़ने और उसे छूने का अहसास एक अलग ही मजा देता है और खास तरह की उपलब्धि का अहसास भी कराता है। पढ़ने का यह आनंद, यह उपलब्धि न तो केवल कार्ड ही दे सकते हैं और न ही केवल चार्ट! हमारी शालाओं में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पाठ्य-पुस्तकों को ही एकमात्र साधन मान लिया जाता है और पूरी प्रक्रिया उसी पर केंद्रित होकर रह जाती है। कई बार तो ऐसा होता है कि बच्चों के पास पढ़ने के नाम पर पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त कुछ नहीं होता। अनेक बार तो वह भी समय से उपलब्ध नहीं हो पाती। प्रारंभिक साक्षरता पर हुए शोध हमें बताते हैं कि कहानियों की किताबों से परिचय और उनसे जुड़ाव होना बच्चों के लिए इस रूप में लाभदायक होता है कि वे लिखित या प्रिंट, पढ़ने, अर्थ निकालने आदि के बारे में अनेक महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं का निर्माण करते हैं। ऐसे अनेक बच्चे हैं; जिन्हें घर पर इस प्रकार का लिखत समृद्ध परिवेश नहीं मिलता, तो शाला की यह और भी जिम्मेदारी हो जाती है कि वह बच्चों को इस प्रकार का समृद्ध परिवेश उपलब्ध कराए। इस दिशा में बाल साहित्य की विशेष भूमिका है।

बच्चों में स्थायी साक्षरता कौशलों के साथ-साथ आलोचनात्मक

चिंतन, कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता का विकास करने के लिए विविध प्रकार की कहानियों की किताबों से उनका परिचय करवाया जाना बहुत महत्त्वपूर्ण है। कक्षा में 'पढ़ने का कोना' और/या विद्यालय में एक जीवंत पुस्तकालय की उपस्थिति बच्चों को विविध प्रकार की पठन सामग्री से परिचित करवाने और उन्हें सक्रिय 'पाठक' के रूप में तैयार करने में मदद मिलती है। इस दिशा में सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत शाला -पुस्तकालयों को जीवंत बनाने और पुस्तकालय में पुस्तकें/बाल साहित्य खरीदने के लिए राज्यों को अनुदान-राशि भी प्रदान की गई।

इस संदर्भ में यह सवाल भी उठता है कि अच्छा बाल साहित्य क्या होता है, उसकी क्या विशेषताएँ होती हैं, अच्छा बाल साहित्य कहाँ से प्राप्त किया जा सकता है, क्या कोई ऐसी सूची है जो यह बता सके, सुझा सके कि किस प्रकार का बाल साहित्य बच्चों को पढ़ने, पढ़ना सीखने, पढ़कर समझने और भाषायी क्षमताओं का विकास करने में मदद करेगा। एनसीईआरटी द्वारा इन सभी सवालों को सम्बोधित करने का प्रयास किया गया।

बाल साहित्य : चयन-प्रक्रिया

बच्चों को स्वतंत्र पाठक बनाने के संदर्भ में यह बिंदु भी महत्त्वपूर्ण है कि पुस्तकालयों में बाल साहित्य का चयन ध्यानपूर्वक किया जाना चाहिए। किताबें ऐसी हों जो बच्चों के विभिन्न आयु-वर्गों, विभिन्न प्रकार की पठन क्षमताओं वाले और विविध प्रकार की रुचियों वाले बच्चों के लिए उपयुक्त हों। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने 'प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम' के अंतर्गत 2007-08 से प्राथमिक कक्षाओं के लिए हिंदी, अंग्रेजी और अब उर्दू (2014-15) में बाल साहित्य की समीक्षा करने और एक प्रस्तावित सूची का निर्माण करने का कार्य प्रारम्भ किया जिससे बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालयों, राजकीय बोर्ड और शिक्षा से सरोकार रखने वाले अन्य कर्मियों के लिए अच्छा बाल साहित्य उपलब्ध हो सके। इस सूची का निर्माण दो स्तरों पर किया गया है- स्तर एक- कक्षा एक और दो के लिए है तथा स्तर दो- कक्षा तीन से पाँच के बच्चों के लिए है। बाल साहित्य के चयन के लिए जो प्रक्रिया अपनाई गई, वह इस प्रकार है -

विभिन्न प्रकाशकों से बाल साहित्य का आमंत्रण

विभिन्न प्रकाशकों से बाल साहित्य को आमंत्रित करने के लिए समाचार-पत्र सहित एनसीईआरटी की वेबसाइट पर एक विज्ञापन प्रकाशित किया गया। जिसमें देश भर के प्रकाशकों से प्राथमिक स्तर के लिए उपयोगी बाल साहित्य भेजने के लिए कहा गया। 2007-08 में विदेशी प्रकाशकों से भी पुस्तकें आमंत्रित की गई थीं। परिषद् की वेबसाइट पर दिया गया विज्ञापन विस्तृत था; जिसमें इन बिंदुओं का उल्लेख था कि किस प्रकार का बाल साहित्य अपेक्षित है। जो बाल साहित्य वे भेज रहे हैं उनके सम्बन्ध में यह स्पष्टतः उल्लेख हो कि वे किस स्तर; स्तर एक या दो के लिए हैं। दूसरी बार दिए गए विज्ञापनों में यह विशेष अनुरोध किया गया कि प्रकाशक वे किताबें न भेजें, जो वे पिछले वर्ष भेज चुके हैं। यह इसलिए था कि उन किताबों की एक बार समीक्षा हो ही चुकी है और उनकी पुनः समीक्षा करने में समय लगाना उचित नहीं था। साथ ही यह भी अनुरोध किया गया कि पाठ्य-पुस्तकों और अभ्यास पुस्तकों को सूची में शामिल न करें। इस तरह देश भर से हजारों किताबें प्राप्त हुईं और भाषा (हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू, उनके स्तर) स्तर एक या दो, प्रकाशकों और शीर्षकों की संख्या के अनुसार किताबों की 'कोडिंग' की गई ताकि समीक्षा करने में और सूची को तैयार करने में सहूलियत हो सके।

बाल साहित्य की समीक्षा के लिए मानदंडों का निर्माण

विभिन्न विषय-विशषेज्ञों की मदद से बाल साहित्य की समीक्षा के लिए मानदंडों को सुनिश्चित किया गया। मानदंडों का निर्माण करते समय बाल साहित्य के स्वरूप, उसकी उपयोगिता और विविध सरोकारों, संवेदनाओं को ध्यान में रखा गया। गहन चर्चा और विमर्श के उपरांत समीक्षा के मानदंड तैयार किए गए। चर्चा के दौरान बिंदु भी आया कि कविताओं की एक अलग ही विद्या होती है जो गद्य से भिन्न है। इसकी अपनी कुछ विशेष अपेक्षाएँ हैं। अतः कविताओं के लिए विशेष रूप से मानदंड तैयार किए गए। इसके अतिरिक्त बाल साहित्य की विषय-वस्तु, भाषा, कथ्य, चित्र,

संवेदनाएँ या सरोकार, ले-आउट, कागज की गुणवत्ता आदि बिंदुओं को मानदंडों की सूची में विस्तार दिया गया। विषय-वस्तु के अंतर्गत इस बिंदु पर बल दिया गया कि वह बच्चों के स्तर और रुचि के अनुकूल हो, जो बच्चों के परिवेश से जुड़ाव रखती हो, जो पढ़ने के आनंद का पोषण करे, बच्चों में कल्पनाशीलता, रचनात्मकता का विकास करे, उनमें विभिन्न भाषायी कुशलताओं का विकास करे, जो क्षेत्रीय/लोक साहित्य से परिचय कराए आदि। कथ्य और भाषा के अंतर्गत यह ध्यान रखा गया कि कथा-वस्तु स्पष्ट है और पाठक उससे जुड़ाव महसूस करता है, भाषा कथ्य अनुकूल है और बोधगम्य है, कथ्य सरल है, कथ्य की प्रस्तुति रोचक है, वाक्यों की संरचना सरल और बच्चों के स्तर के अनुरूप है, शब्द बच्चों के दैनिक जीवन, परिवेश से जुड़े हैं, भाषा सहज और स्वाभाविक है, कथ्य और भाषा क्षेत्रीय, जातीय और लिंग भेद सम्बन्ध पूर्वाग्रहों से मुक्त है आदि। चित्रों के संदर्भ में इस बिंदु पर बल दिया गया कि वे स्पष्ट और आकर्षक हैं, कल्पनापरक और विविधता से परिपूर्ण हैं, विषय-वस्तु से जुड़े हुए हैं, विषय-वस्तु का संवर्धन करते हैं, समस्त प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त हैं आदि। कविताओं के लिए यह ध्यान में रखा गया कि उनमें लयात्मकता है, अंतर्वस्तु (थीम) में विविधता है और वे रोचक हैं, वे विविध अनुभवों/संवेगों को प्रदर्शित करती हैं, ध्वन्यात्मक शब्दों का बाहुल्य है आदि। अन्य पक्षों के अंगर्तत आवरण पृष्ठ, शीर्षक, कागज़ की गुणवत्ता, लेआउट, फोंट का आकार, छपाई, मूल्य आदि की सुसंगतता पर विचार किया गया।

बाल साहित्य की समीक्षा

बाल साहित्य की समीक्षा के लिए एक समिति का निर्माण किया गया। इस समिति में ऐसे विषय-विशेषज्ञ शामिल हैं जो बाल साहित्य जैसे गहन विषय पर अधिकार रखते हैं या जिन्हें बाल साहित्य की बेहतर समझ है, ऐसे शिक्षक जो बच्चों के मनोविज्ञान, उनकी रुचि-क्षेत्रों, उनकी पसंद-नापसंद या विविधरूपी पंसद का अनुभव रखते हैं, जेंडर, विशेष रूप से सक्षम बच्चों की संवेदनाओं से सरोकार रखने वाले, लेखक, चित्रांकनकर्ता, शिक्षक-प्रशिक्षक आदि। समिति में विभिन्न विषयों, जैसे- विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित आदि के विशेषज्ञों को भी शामिल किया गया ताकि जानकारी-परक बाल साहित्य में विद्यमान विषयगत अवधारणाओं की भी समीक्षा हो सके। विषयगत अवधारणाओं का स्पष्ट और सही होना भी समीक्षा का एक अन्य मुख्य बिंदु है। बाल साहित्य की समीक्षा के पहले चरण में समीक्षा समिति में शामिल परिषद् के विभिन्न संकाय सदस्यों द्वारा ऐसी विभिन्न किताबों को मोटे तौर छाँटकर अलग कर दिया जाता है जो इस प्रकार की होती हैं -पाठ्य-पुस्तकें, अभ्यास पुस्तिकाएँ, व्याकरण की किताबें, ऐसी किताबें जो प्राथमिक स्तर से बहुत ही उच्च स्तर की हैं, जो सीधे-सीधे उपदेश देती हैं या 'बुरी तरह से' उपदेशात्मक हैं। समीक्षा के दूसरे और अन्य चरणों में समिति में शामिल विषय-विशेषज्ञों द्वारा मानदंडों के आधार पर बाल साहित्य के अंतर्गत प्राप्त किताबों की समीक्षा की जाती है। विषयगत अवधारणाओं की प्रामाणिकता पर चर्चा होती है। समीक्षा के दौरान यह भी निर्धारित किया जाता है कि अमुक किताब किस स्तर के लिए उपयुक्त है। ये चरण अत्यंत गहन और विमर्श के होते हैं, क्योंकि इन चरणों में बहुत बारीक अवलोकन के बाद ही अनुमोदित बाल साहित्य की सूची तैयार की जाती है।

बाल साहित्य की सूची

समीक्षा के उपरांत अनुमोदित बाल साहित्य की सूची को दो स्तरों पर विभाजित किया जाता है और उन्हें भाषावार वर्गीकृत किया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक भाषा की दो सूचियाँ तैयार की जाती हैं -स्तर एक; कक्षा 1 और 2 या स्तर दो; कक्षा 3-5। बाल साहित्य की इस सूची में चयनित बाल साहित्य का शीर्षक, प्रकाशक, प्रकाशन वर्ष, मूल्य आदि का समुचित उल्लेख होता है, ताकि इस बाल साहित्य की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जा सके, सभी इन्हें आसानी से प्राप्त कर सकें। प्रत्येक सूची के साथ एक अनुच्छेद लिखा जाता है जिसमें बाल साहित्य की समीक्षा के उद्देश्य और कक्षा में उसके इस्तेमाल, उसके लाभ आदि के बारे में लिखा जाता है ताकि अधिक से अधिक व्यक्ति इस सूची का लाभ उठा सकें। बच्चे, शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष, शिक्षा और बच्चों के साथ किसी भी प्रकार का सरोकार रखने वाले कर्मी, शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान आदि सभी को सम्बोधित यह सूची अत्यंत सहायक है। अभिभावकों को भी विशेष रूप से स्थान दिया गया है।

बाल साहित्य की समीक्षा : कुछ खास अनुभव

बाल साहित्य की समीक्षा से जुड़े अनुभवों ने बहुत कुछ सिखाया है और चिंतन, कार्य को दिशा भी प्रदान की है। आइए, एक-एक करके इन अनुभवों को साझा करते हैं और बाल साहित्य की रोचक भरी दुनिया को समझते हैं -

- एक आम अनुभव जो समिति में शामिल लगभग हर व्यक्ति ने अनुभूत किया है कि विज्ञापन में सुझाए गए बिंदुओं को दरकिनार करते हुए बाल साहित्य के नाम पर बहुतायत में पाठ्य-पुस्तकें, अभ्यास पुस्तिकाएँ, व्याकरण सम्बन्धी किताबें, वर्णमाला सिखाने वाली बेहद नीरस किताबें प्राप्त हुईं। अनेक किताबें ऐसी भी थीं, जो किसी 'पोथी' से कम नहीं थीं; यानी बहुत मोटी किताबें जिन्हें देखकर कोई भी बता सकता है कि ये प्राथमिक स्तर के बच्चों के स्तर के अनुरूप नहीं हैं। यह अनुभव इस ओर संकेत करता है कि बाल साहित्य की अवधारणात्मक समझ 'खतरे' में है।
- 'खतरे' का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए बाल साहित्य के विषय विभिन्न प्रकार के जानवर, पक्षी, जंगल, चाँद आदि ही हैं। इनमे भी बिल्ली, चूहा, शेर, बंदर, चिड़िया, तोता आदि ही हैं। ऐसा लगा कि बाल साहित्य की दुनिया से नए विषय समाप्त हो गए हैं। इतना ही नहीं इनके विशेषण और रिश्ते भी तयशुदा हैं, जैसे- चालाक बिल्ली, हाथी दादा, बंदर मामा, बिल्ली मौसी, चंदा मामा, शेर जंगल का राजा, मिट्ठू तोता आदि। कहना न होगा कि सृजनात्मकता का अभाव साफ-साफ नजर आने लगा है।
- कुछ प्रकाशकों से ऐसी भी किताबें प्राप्त हुईं जो क्रमिक पुस्तकमाला श्रेणी की थीं। इस तरह की किताबों को बाल साहित्य की सूची में रखने के बारे में गहन विचार-विमर्श हुआ। चयन समिति के विशेषज्ञों का मानना था कि ये किताबें एक खास उद्देश्य से लिखी जाती हैं, जो सम्भवतः फुर्सत में पढ़ी जाने वाली सामग्री से भिन्न होता है। अतः ऐसी किसी भी क्रमिक पुस्तकमाला को बाल साहित्य की चयनित सूची में शामिल करने पर विचार नहीं किया गया। इतना ही नहीं, और ये किताबें किन मानकों के आधार पर श्रेणीकृत की गई हैं, उनमें भी अस्पष्टता थी।
- बच्चे कक्षा में; किसी संदर्भ में भाषा के विविध प्रयोगों को अपने साथ लाते हैं और इस प्रकार कक्षा में विचार-विमर्श को समृद्ध बनाते हैं। भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में भाषा परिवेश का महत्त्व होता है। यदि बच्चों को समृद्ध भाषिक परिवेश उपलब्ध कराया जाए, तो वे सहजता से भाषा को अर्जित करते चलते हैं। वे एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी कर सकते हैं। भाषाएँ एक-दूसरे के सान्निध्य में ही फलती-फूलती हैं। यही कारण है कि कक्षा में सहज संसाधन के रूप में 'बहुभाषिकता' को उपयोग में लाया जा सकता है। लेकिन जिस तरह की द्विभाषिक किताबें हमें प्राप्त हुईं, वे पाठों को हिन्दी से अंग्रेजी सिखाने के विचारों पर आधारित लगीं। इस प्रकार के शब्दानुवाद का एक उपदेशात्मक स्वरूप होता है, जो पठन के प्रवाह को बाधित करता है। इससे भाषा की मूल संरचना भी बाधित होती है। यही बात हमें द्विभाषिक पुस्तकों में भी दिखाई दी। अतः द्विभाषिक पुस्तकों को इस चयन में शामिल नहीं किया गया। इस संदर्भ में एक बिंदु और विचारणीय है, वह यह कि क्या हम बड़े लोग कोई कहानी दो भाषाओं में एक साथ पढ़ते हैं? क्या कोई उपन्यास, लघुकथा, कथा संकलन द्विभाषिक प्रकाशित होता है? नहीं, क्योंकि साहित्य पढ़ना भाषा सीखने के प्रयासपूर्ण उद्देश्य से अलग होता है। साहित्य को पढ़ना पढ़ने-लिखने की कुशलताओं में मदद तो करता है; लेकिन उसका प्रमुख उद्देश्य पढ़ने का आनंद देना है भाषा सिखाना नहीं। तो फिर बाल साहित्य में द्विभाषिक किताबों की 'घुसपैठ' क्यों? जरा सोचिए!
- चयन समिति के समक्ष अनेक किताबें ऐसी भी आईं जो प्राथमिक स्तर के बच्चों के रुचि-क्षेत्र से न तो मेल खाती थीं और न ही उनके स्तर के अनुरूप थीं। उनकी विषय-वस्तु और अवधरणाएँ बेहद जटिल थीं। वे किसी भी दृष्टि से पढ़ने और पढ़कर उसका आनंद लेने की प्रेरणा देने वाली नहीं लगीं, जैसे- पौराणिक ग्रंथों और महाकाव्यों के छद्म संस्करण, आत्मकथाएँ, संतों की कहानियाँ, विज्ञान और गणित की जटिल अवधारणाएँ आदि।
- बाल साहित्य में मूल्यों के प्रति 'अति' आग्रह उसके आकर्षण और सरसता को कम कर देता है, जबकि हम सब यह जानते हैं कि मूल्य सिखाए नहीं जा सकते, वे ग्रहण किए जाते हैं। एक कहानी या कोई एक प्रसंग किस बच्चे के मन-मस्तिष्क पर क्या और कैसा प्रभाव छोड़ेगा, यह तो वही बता सकता है। किसी भी पाठ्यवस्तु से समान अर्थ ग्रहण किया जाए- अत्यंत कठिन है। हमारे अनुभव, हमारी समाज-आर्थिक और

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि हमारे सोचने-विचारने को प्रभावित करती है। नैतिक मूल्यों के 'जबरन बोझ' से दबा बाल साहित्य भी चयन समिति के समक्ष आया। प्रत्यक्ष रूप से दिए गए उपदेश बच्चों को किताब पढ़ने के लिए प्रेरित नहीं करते। ऐसी अनेक किताबों को सूची से 'परे' करते हुए लगा कि बाल साहित्य के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ समझना, करना शेष है।

- चित्र विषय-वस्तु को संदर्भ में समझने में मदद करते हैं। चित्रों के सहारे छपी/लिखित भाषा के बारे में अनुमान लगाने में मदद मिलती है। चित्र यदि आकर्षक, जीवंत, तर्क संगत और कल्पनाशील हों तो इससे पाठक को पढ़ने में मदद मिलती है तथा वे स्वयं ही कथ्य को सम्प्रेषित कर देते हैं। चित्र वह भी कहते हैं जो 'शब्दों में कहा नहीं गया।' कुछ बाल साहित्य केवल चित्रों के द्वारा ही रचा गया था और उन्हीं के सहारे कहानी आगे बढ़ रही थी। जबकि अनेक किताबें ऐसी थीं, जिनके चित्रों में न तो किसी तरह का आकर्षण था और न ही जीवंतता! कंप्यूटर के सहारे बनाए गए चित्रों में प्रायः जीवंतता का अभाव रहता है। यूँ कहा जा सकता है कि चित्रों के मामले में 'अपन' का अनुभव अत्यंत 'कटु' रहा।

- बाल साहित्य की 'कुछ' किताबों ने 'बहुत' समय लिया। हालाँकि एक-एक किताब को तीन-तीन विषय-विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित किया गया था और सर्वसहमति से किताब को अनुमोदन देने या न देने का निर्णय लिया गया था; लेकिन कुछ किताबों के मामले में तो मानो 'सुई' अटक ही गई हो। बारिश का एक दिन, जूँ और टूँ, काँच का पेड़, मुकुंद और रियाज, नन्हे खरगोश की बुद्धिमानी, मेंढक का नाश्ता, भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं, बाबूजी का दबंग दस्ता, आदि। इनमें से विशेष रूप से मुकुंद और रियाज़ का ज़िक्र करना रोचक बिंदुओं को उजागर करेगा। नीना सबनानी द्वारा लिखी और चित्रित कहानी में दो दोस्तों -मुकुंद और रियाज़ के मधुर रिश्तों को दिखाया गया है। दोनों पड़ोसियों में बेहद आत्मीयता और समझदारी है। वे एक-दूसरे के त्योहारों को मिलकर मनाते हैं, एक-दूसरे के घर जाते हैं। कहानी का कथ्य अनेक संवेदनाओं को समेटे हुए है; लेकिन कहानी में 'जिन्ना टोपी, भारत पाकिस्तान के विभाजन' का जिक्र है। चयन-समिति में अलग-अलग तर्क प्रस्तुत किए गए। कुछ कथ्य, संवेदना, विशिष्ट चित्रांकन के आधार पर इस कहानी को रखने के पक्ष में थे, तो कुछ 'जिन्ना टोपी और भारत पाकिस्तान के विभाजन' के उल्लेख के कारण न रखे जाने का अपना पक्ष रख रहे थे। संवाद और गहन विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि यह कहानी उच्च स्तर के लिए अनुमोदित की जा सकती है; लेकिन प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए 'जिन्ना टोपी और भारत पाकिस्तान के विभाजन' के पूरे परिप्रेक्ष्य को समझना कठिन हो जाएगा। बाल साहित्य स्वतंत्र पठन को प्रोत्साहित करने के लिए है, फिर चाहे वह कक्षा हो, विद्यालय हो या घर! बाल साहित्य शिक्षक द्वारा ही पढ़ाया जाए -ऐसा भी नहीं है। अतः इस कहानी को फिलहाल यहाँ न रखा जाए। इसी तरह किताबों के कथ्य, उनकी प्रामाणिकता, उनके चित्रांकन, उनमें छिपे अप्रत्यक्ष संदेश आदि के कारण कुछ कहानियों को सूची में शामिल नहीं किया गया और कुछ को इसी बहस, चर्चा, गहन विमर्श और सटीक तर्क के बाद शामिल कर लिया गया। बाल साहित्य में अनुवाद की समस्या काफी है। अनेक बार अनुवाद इतना बोझिल और यांत्रिक होता है कि वह पढ़ने का मजा नहीं दे पाता। भाषायी संरचना में 'टूटन' साफ-साफ नजर आती है। इतना ही नहीं कुछ किताबों को कक्षा में भी इस्तेमाल करते हुए बच्चों की प्रतिक्रियाओं का गहन अवलोकन किया गया, उनकी पसंद-नापसंद के बारे में पूछा गया और जब निर्णय लिये गए, बच्चों के साथ निरंतर काम करते हुए बाल साहित्य की समझ और चयन प्रक्रिया बेहतर बनती चली गई। हम 'बड़े' जिस तरह से चीजों को देखते हैं, संभवतः बच्चे उस तरह से चीजों को नहीं देखते। उनका अपना ही अलग 'अंदाज' होता है।

- बाल साहित्य की कुछ किताबें ऐसी थीं, जिनमें किसी तरह की कोई लम्बी-चौड़ी बहस, गहन विमर्श की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। वे लगभग सभी मानदंडों पर खरी उतरते हुए चयनित सूची में शामिल हो गईं। नो डेविड नो, माला की चाँदी की पायल, बुलबुली के बाँस, मैं भी, रूपा हाथी, आम की कहानी, बिल्ली के बच्चे, थाथू और मैं, जादुई पंख, रजिया का कमाल, मेरा एक दिन, मैं क्या कर सकती हूँ, अक्कड़-बक्कड़, बुढ़िया की रोटी, मीता और उसके जादुई जूते, लौट के चूहा घर को आया, आदि ऐसा ही बाल साहित्य है।

'आम की कहानी' में भी आम के हाथ से निकल जाने से लेकर उसके हाथ में आ जाने तक की कहानी को बेहद रोचक और सुंदर अंदाज़ में प्रस्तुत किया गया है। दरअसल, जब बच्चे चित्र-कथाओं के पन्नों से एक-एक करके गुज़रते हैं तो एक

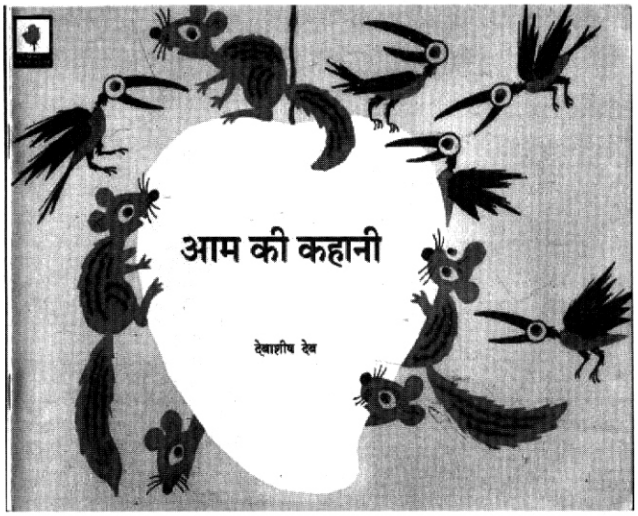

कहानी उनके मस्तिष्क में जन्म ले लेती है। पन्नों के पलटने के साथ उस 'मानसिक कहानी' का भी विकास होता चलता है। फिर भाषा हो या न हो, बच्चों को कोई फर्क नहीं पड़ता। बच्चे चित्रों के सहारे अनुमान लगाने की क्षमता का भी संवर्द्धन करते हैं। बाल साहित्य की श्रेणी में ऐसे साहित्य ने भी जगह पाई जिसमें स्थानीयता का पुट था, ताकि बच्चे उसके साथ अपना तादात्म्य स्थापित कर सकें। आंचलिक शब्द बच्चों के बेहद करीबी दोस्त होते हैं और इन शब्दों के बहाने, अपनी परंपरा, संस्कृति को जानने, उससे जुड़ने और उसे आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है। इसके अतिरिक्त बाल साहित्य में खेल गीतों का भी विशेष महत्त्व है। शब्द जितने बच्चों के करीब होंगे, बच्चे भी उतना ही किताब के करीब होंगे। उदाहरण के लिए -

जा चकिया के तीन देवता,
कीला, मुठिया, यानी।
चकिया घूमे घानी-मानी
चकिया घूमे घानी-मानी (चकिया - अक्कड़-बक्कड़)
अक्कड़-बक्कड़, बम्बे बो
अस्सी नब्बे, पूरे सौ
सौ में लगा धागा,
चोर निकलकर भागा। (अक्कड़-बक्कड़)

शब्दों की आंचलिकता के अतिरिक्त बाल साहित्य का एक और मजबूत

पक्ष है। वह है- शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों की संदर्भगत सटीक पुनरावृत्ति शब्दों, वाक्यों की पुनरावृत्ति एक प्रकार का लयात्मक वातावरण भी पैदा करती है। भाषायी पुनरावृत्ति के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -

- "मैं घूमने जा रहा हूँ", बत्तख का बच्चा बोला।
- "मैं भी चलूँगा", चूजा बोला।
- "मैं गड्ढा खोद रहा हूँ", बत्तख का बच्चा बोला।
- "मैं भी खोदूँगा", चूजा बोला। (मैं भी .....)
- शेर जाग गया/जेबरा जाग गया/चूहा जाग गया। (हाथी की हिचकी)
- उसने पानी पिया/और पिया/और पिया/और पिया (हाथी की हिचकी)

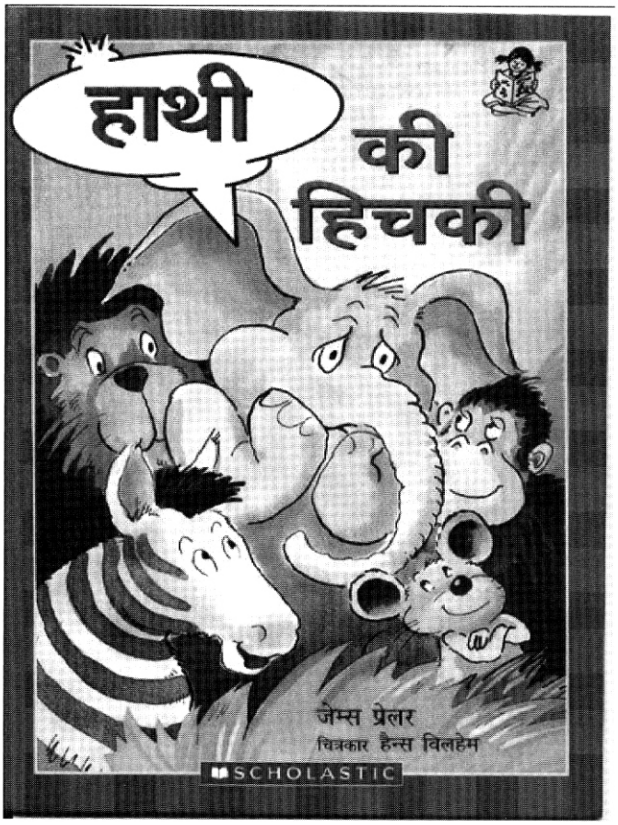

जहाँ तक सामाजिक मूल्यों का सवाल है यह बाल साहित्य सीधे-सीधे उपदेश देने की प्रवृत्ति से बचा हुआ है।

हाँ, यह अलग बात है कि मूल्य कहानी के ताने-बाने में इस तरह गुँथे हुए हों कि वे कहानी के साथ-साथ स्वयं ही, अनायास तरीके से संप्रेषित हो जाएँ। लेकिन रचनाओं का गहन विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि कोरी उपदेशात्मकता, नैतिक मूल्यों से पोषित रचनाओं को जगह देना इस बाल साहित्य का उद्देश्य नहीं है।

स्वतः प्रेषित होने वाले मूल्यों की एक बानगी इस प्रकार है- 'कितनी प्यारी है यह दुनिया' पशु-पक्षी, पेड़-पौधें के प्रति प्रेम का भाव तो प्रकट करती ही है, साथ ही छोटे-भाई-बहनों के प्रति भी स्नेह-भाव को पोषित करती है। 'हाथी की हिचकी' शीर्षक कहानी में एक-दूसरे का सहयोग, अहिंसा, शांति, परस्पर भाईचारा, मैत्री, सद्भाव जैसे मूल्य बेहद सुंदर अंदाज में प्रस्तुत किया गया है। इसी कहानी (हाथी की हिचकी) में केवल दो दृश्य ही इतने सक्षम हैं कि वे पूर्वोक्त समस्त मूल्यों को प्रदर्शित कर सकें। दोनों दृश्यों में शेर, चूहा, जेबरा, सभी मिलजुल कर एक-दूसरे का सहारा लेकर सो रहे हैं। पहले दृश्य में चूहा शेर की पूँछ ओढ़ावन बनाकर बेफिक्री से 'मुँह खोलकर' सोता है तो दूसरे दृश्य में यह बेफिक्री और भी नजर आती है जब चूहा शेर के पैरों और जेबरा शेर की पीठ का सहारा लेकर चैन से सोते हैं। इन दो चित्रों पर बातचीत की जाए तो मूल्यों की दृष्टि से यह कहानी बहुत मूल्यवान् सिद्ध हो सकती है। 'गड़बड़ परिवार ने सुलझाई परेशानी' जेंडर जैसे मुद्दों को सम्बोधित करती है; जिसमें पिता सहित घर के सभी सदस्य घर भर के कपड़े धोते हैं और मिलकर काम करते हैं। इसी तरह 'थाथू और मैं' बेहद मर्मस्पर्शी कहानी है, जिसमें दादाजी और पोती के आपसी रिश्तों की मिठास का अनुभव किया जा सकता है। दादाजी एक माँ की तरह पोती को सुलाते हैं और स्नेह करते हैं। 'जादुई पंख' कहानी में विशिष्ट किस्म का चित्रांकन बेहद आकर्षक है। कागज, पंख आदि से चित्रों को सँजोया गया है।

'कबाड़ी वाला', 'गाँव का बच्चा', 'मेरा है एक घर' अपेक्षाकृत नए विषय हैं और प्रस्तुति में भी नवीनता है। 'घुमंतुओं का डेरा' कविता संकलन में बेहतरीन कविताएँ हैं, जो बच्चों को यह अवसर देती हैं कि वे अपने अनुभवों को उनसे जुड़ा हुआ पाएँ। 'बिग बुक' के रूप

में 'खिचड़ी', 'बिल्ली के बच्चे', 'गिजिगाडू और टिमटिमाते जुगनू' काफी लोकप्रिय हैं। बाल साहित्य का यह रूपाकार कक्षा में चित्रों को दिखाते हुए कहानी सुनाने में मदद करता है। 'रूपा हाथी', 'लालू और पीलू', 'बिल्ली के बच्चे ' आदि ऐसी कुछ रचनाएँ हैं,जो बच्चों द्वारा और बड़ों द्वारा भी बेहद पसंद की गई हैं।

इस प्रकार बाल साहित्य के चयन की यह प्रक्रिया जारी है ताकि बच्चों के पढ़ने के लिए सार्थक, रोचक और उन्हीं की दुनिया के रंगों से सराबोर सामग्री उपलब्ध कराई जा सके। चयनित बाल साहित्य की सूची को एनसीईआरटी की वेबसाइट पर 'अपलोड' किया जाता है; ताकि इससे एक बड़ा वर्ग लाभान्वित हो सके। बाल साहित्य के प्रति स्पष्ट अवधारणा का निर्माण करने और यह समझ विकसित करने में कि अच्छे बाल साहित्य का चयन किस प्रकार किया जाए, इस संदर्भ में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा एक प्रक्रिया दस्तावेज भी वेबसाइट पर अपलोड किया है, जिससे विभिन्न राज्य एवं संगठन आदि अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी बाल साहित्य की चयन-प्रक्रिया को सम्पन्न करते हुए बच्चों के पढ़ना सीखने में मदद कर सकें। इतना ही नहीं, उच्च प्राथमिक स्तरों पर भी बाल/किशोर साहित्य की चयन-प्रकिया के प्रति जागरूकता का विकास करना जरूरी है ताकि पुस्तकालयों को जीवंत बनाया जा सके और बच्चों को पढ़ने के लिए विविध रूपी सामग्री उपलब्ध कराई जा सके।

डॉ. ऊषा शर्मा

डॉ. ऊषा शर्मा एनसीईआरटी में प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम की समन्वयक हैं। वे देश भर में बच्चों के शुरुआती पढ़ना-लिखना सीखने के बेहतर और प्रामाणिक तौर-तरीकों को कक्षायी प्रक्रियाओं का अभिन्न हिस्सा बनाने के लिए निरंतर कार्यरत हैं। वे प्रारंभिक साक्षरता से जुड़ी संसाधन, सामग्री-निर्माण और विभिन्न राज्यों में इस सम्बंध में प्रशिक्षण/कार्यशालाओं के आयोजन में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। वे कक्षा एक और दो के बच्चों के लिए एक बाल पत्रिका 'फिरकी बच्चों की' की शैक्षणिक संपादक हैं। 1992 में स्कूली अध्यापन से अपने कैरियर की शुरुआत करते हुए लगभग 10 वर्षों तक 'डाइट' (एस.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में कार्य किया और 2007 से वे एन.सी.ई.आर.टी. में भाषा शिक्षा, बाल साहित्य और प्रारंभिक साक्षरता के क्षेत्र में अपना अपूर्व योगदान दे रही हैं।

सम्पर्क- ushasharma1730@yahoo.com